



मरुमेघ

किसान ई पत्रिका

www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध



ISSN : 2456-2904

© marumegh 2022

आलेख प्राप्ति : 02-02-2022

स्वीकरण : 04-02-2022

कम्पोस्ट खाद बनाएं, विदेशी मुद्रा बचाएं

¹पवन कुमार, ²एस0 आर0 ढाका, ²हनुमान सिंह जाटव, ³झूमर लाल, ²संजय कुमार
अत्तर व ²कैलाश चन्द्र

¹शोध छात्र, उद्यान विभाग, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

²कृषि विश्वविद्यालय फतेहपुर, ³कृषि अनुसंधान केन्द्र फतेहपुर, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि
विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान

ई मेल: kumarpawan3201@gmail.com

परिचय : पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए भूमि में जो चीजें मिलायी जाती हैं, उन्हें खाद कहते हैं। जो जीवित वस्तु से खाद तैयार होती है उसे सेंद्रीय या कम्पोस्ट खाद कहते हैं। निर्जीव वस्तु से बनी खाद को 'निरेन्द्रीय या रासायनिक खाद' कहते हैं।

पौधों को बढ़वार हेतु कुल 17 आवश्यक पोषक तत्वों की जरूरत होती है जो कम्पोस्ट खाद में उपलब्ध होते हैं जबकि रासायनिक खाद में नहीं होते। कम्पोस्ट खाद भूमि को संतुलित आहार प्रदान करता है अतः यह सम्पूर्ण शुद्ध एवं संतुलित खाद है।

कम्पोस्ट खाद की आवश्यकता :-

विश्व में, रासायनिक खादों का उपयोग अधिक होने के कारण वहां की लाखों हेक्टर भूमि बंजर हो गई है। जिसके चलते वहां के वैज्ञानिक वैकल्पिक तरीकों की खोज में लग गये हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन सम्पूर्ण विश्व में कीटनाशक रसायनों का विरोध करने लगा है तथा भारत में भी शासन को आगाह कर रहा है। ऐसी परिस्थिति में किसानों के लिए पशुओं का गोबर व मल-मूत्र बड़ा लाभकारी सिद्ध हो सकता है। किसान भाई यदि कम्पोस्ट खाद का उपयोग करने लगे तो धीरे-धीरे रासायनिक खाद व कीटनाशक दवाओं से मुक्ति मिल सकती है। साथ ही विदेशी मुद्रा व विदेशी कम्पनियों से देश को छुटकारा भी मिल सकता है।

कम्पोस्ट खाद के निर्माण की विधि :-

वैज्ञानिक विधि अपनाकर एक किलो गोबर से लगभग 30 किलो कम्पोस्ट खाद तैयार कर सकते हैं।

टांका तैयार करना :

जमीन के ऊपर ईट का आयताकार टांका बनाया जाता है जिसकी दीवारें 9 इंच चौड़ी होती है। टांके के अन्दर की लम्बाई 12 फुट, चौड़ाई-5 फुट तथा ऊंचाई 3 फुट रखते हैं। यह टांका हवादार होना चाहिये। इसके लिए चारों दीवारों में छेद रखे जाते हैं।

आवश्यक सामग्री :

- फल व सब्जियों के पत्ते, डंठल, जड़े आदि लगभग 1400 किग्रा. से 1500 किग्रा.
- गोबर—100 किग्रा.
- छनी हुई मिट्टी—1750 किग्रा.
- पानी—मौसम के अनुसार 1500 लीटर से 2000 लीटर
- पशुओं का मल—मुत्र – 15 लीटर

टांका भरने की विधि :

आवश्यक सामग्री एकत्रित करने के पश्चात निश्चित क्रमानुसार एक टांका 48 घण्टे में भर कर सील कर देना चाहिये।

प्रथम भराई :

सबसे पहले टांके के नीचे व अन्दर चारों ओर की दीवारों पर गोबर का पतला घोल बनाकर छिड़कते हैं।

पहली परत :

गोबर के छिड़काव के पश्चात् फलों व सब्जियों के पत्ते, डंठल आदि को 6 इंच की ऊंचाई तक भरना चाहिए। यह सामग्री लगभग 100 किग्रा. आती है।

दूसरी परत :

5 किग्रा. गोबर को लगभग 150 लीटर पानी में घोलकर पहली परत पर छिड़काव करना है ध्यान रहे कि पत्ते, डंठल अच्छी तरह से भीग जावें।

तीसरी परत :

दूसरी परत पर 1/2 इंच मोटी परत सूखी छनी हुई मिट्टी को बिछा देते हैं। इसके बाद पानी का छिड़काव करते हैं।

इसी क्रम से पूरा टांका अर्थात् 12 परत तक भरकर इसके ऊपर 1.5 फुट ऊंचा झोपड़ीनुमा आकार में गोबर की परत डालते हैं। अन्त में मिट्टी की 3 इंच मोटी परत डालकर गोबर व मिट्टी के मिश्रण से लीप देते हैं।

दूसरी भराई :

बीस दिन पश्चात टांके में भरी हुई सामग्री सिकुड़कर लगभग ऊंचाई 9 इंच तक कम हो जाती है। उपरोक्त क्रमानुसार टांके को पुनः भरते हैं।

केंचुओं का प्रवेश :

टांका भरने के डेढ़ माह पश्चात टांके का तापक्रम कम होने लगता है उस समय टांके के छेदों में से केंचू प्रवेश कराये जाते हैं। केंचुए अन्दर जाकर खाद की उर्वरा शक्ति को और उत्तम बनाते हैं।

लगभग 90 दिन पश्चात् खाद पूर्ण रूप तैयार हो जाती है। अब टांके के ऊपर की मिट्टी की परत को हटाये, जिसमें से भुरे रंग की खाद निकलेगी। इसे छान लेते हैं। कम्पोस्ट खाद में नमी लगभग 15 प्रतिशत बनी रहना आवश्यक है।

कम्पोस्ट खाद में, नाइट्रोजन फास्फोरस व पोटेशियम की प्रतिशत मात्रा निम्न प्रकार है—

नाइट्रोजन – 0.514 प्रतिशत

फास्फोरस – 0.719 प्रतिशत

पोटेशियम – 1.562 प्रतिशत

उपयोगिता :-

प्रथम वर्ष में इस खाद से बिना रासायनिक खाद के उपज में 33 प्रतिशत लाभ देती है। दूसरे वर्ष में 65 प्रतिशत लाभ देती है। तीसरे वर्ष में पूर्ण उर्वरा शक्ति मिट्टी में उत्पन्न कर देगी व रासायनिक खाद की आवश्यकता नहीं होगी।

यह खाद विभिन्न प्रकार के फूलों, सब्जियों, नर्सरी, लॉन के साथ साथ फसल उत्पादन के लिये उत्तम खाद है। फसलों के लिए खेत तैयार करते समय एक एकड़ में दो टन खाद का उपयोग करना चाहिए।
